जैसे बाप, वैसे बेटे
(7:2-53)

हमारा पिछला पाठ विश्वास के नायकों में से एक, अर्थात प्रथम मसीही शहीद स्तिफनुस का अध्ययन था। अब हम स्तिफनुस के उस प्रवचन को निकटता से देखना चाहते हैं जिसका उसने महासभा में प्रचार किया था।

स्तिफनुस का प्रवचन अद्‌भुत है। प्रेरितों के काम की पुस्तक में किसी प्रेरित के अलावा[1] किसी अन्य व्यक्ति द्वारा कही गई कुछ बातों में से यह एक है और पुस्तक में यह सबसे लम्बा प्रवचन है![2] प्रवचन के अन्तिम शब्दों के निष्कर्ष के आधार पर (7:51-53), हमने पाठ का शीर्षक ''जैसे बाप, वैसे बेटे'' रखा है। कई लोगों ने स्तिफनुस के प्रवचन को ''अन्त में कुछ गालियों के साथ यहूदी इतिहास की अस्पष्ट सी समीक्षा से कुछ अधिक'' कहते हुए खारिज कर दिया है। परन्तु, प्रत्येक बात इस ओर संकेत करती है कि यह आत्मा की प्रेरणा से बोला गया था और पाठ में प्रत्येक वाक्य का यही उद्देश्य था।

अपने बचाव में स्तिफनुस ने तीन बातों पर ज़ोर दिया था: (1) उसने लगाए गए आरोपों के विरुद्ध अपना पक्ष *रखा*। (2) ऐसा करते समय उसने यह ज़ोर दिया कि दोषी वह नहीं, बल्कि उस पर आरोप लगाने वाले ही हैं अर्थात वे उसी आरोप के दोषी थे जो उन्होंने उस पर लगाया था। (3) उसका पाठ मसीह पर ही केन्द्रित था। जैसा कि हम देखेंगे, पूरे प्रवचन में मसीह के बारे में ही देखने को मिलता है अर्थात कहीं उसका नाम स्पष्ट आता है और कहीं उसका संकेत छिपा होता है![3]

पवित्र वाचा (7:2-16)

स्तिफनुस ने आरम्भ करते हुए कहा, ''हे भाइयो, और पितरो सुनो!'' (7:2क)। उसके शब्दों से सभा के प्रति उसके मन में सम्मान दिखाई देता था![4] यहूदी लोग अपनी कौम के इतिहास को बार-बार सुनना पसन्द करते थे; इससे इस बात को बल मिलता था कि वे परमेश्वर के विशेष लोग थे। स्तिफनुस के आरम्भिक शब्द हथियार गिराने वाले थे:

> हमारा पिता इब्राहीम हारान में बसने से पहिले[5] जब मिसुपुतामिया में था; तो तेजोमय परमेश्वर ने उसे दर्शन दिया। और उससे कहा कि तू अपने देश और अपने कुटुम्ब से निकलकर उस देश में चला जा, जिसे मैं तुझे दिखाऊंगा। तब वह कसदियों के देश[6] से निकलकर हारान में जा बसा;[7] और उसके पिता की मृत्यु के बाद परमेश्वर ने उसको वहां से इस देश में लाकर बसाया जिसमें अब तुम बसते हो![8] और उसको

> कुछ मीरास बरन पैर रखने भर की भी उस में जगह न दी,[9] परन्तु प्रतिज्ञा की कि मैं यह देश, तेरे और तेरे बाद तेरे वंश के हाथ कर दूंगा; यद्यपि उस समय उसके कोई पुत्र भी न था। और परमेश्वर ने यों कहा; कि तेरी सन्तान के लोग पराये देश में परदेशी होंगे; और वे उन्हें दास बनाएंगे, और चार सौ वर्ष तक दुख देंगे।[10] फिर परमेश्वर ने कहा; जिस जाति के वे दास होंगे, उस को मैं दण्ड दूंगा; और इसके बाद वे निकलकर इसी जगह मेरी सेवा करेंगे। और उसने उससे खतने की वाचा बान्धी;[11] और इसी दशा में इसहाक उस से उत्पन्न हुआ; और आठवें दिन उसका खतना किया गया; और इसहाक से याकूब और याकूब से बारह कुलपति उत्पन्न हुए (7:2ख-8)।

स्तिफनुस पर परमेश्वर की निन्दा करने का आरोप लगा था (6:11), परन्तु उसने परमेश्वर के प्रति गहरा सम्मान प्रकट किया। उसने उसे ''तेजोमय परमेश्वर''[12] कहकर सम्बोधित किया और ध्यान दिलाया कि परमेश्वर ने इब्राहीम और दूसरों के जीवन में किस प्रकार काम किया था।

स्तिफनुस सम्भवत: कुछ अन्य सच्चाइयों को भी स्थापित कर रहा था। इब्राहीम के जीवन में महान घटनाएं घटीं, जो व्यवस्था के देने से पहले और मन्दिर बनने से बहुत पहले की बात है! सम्भवत: यह भी महत्वपूर्ण है कि बहुत सी घटनाएं जिनका उसने नाम लिया, फलस्तीन के बाहर ही घटीं! हम जानते हैं कि जब स्तिफनुस ने इब्राहीम को दी गई प्रतिज्ञा का उल्लेख किया तो हर एक यहूदी के मन में वह वायदा याद आ गया होगा जिसमें सभी जातियों को मसीहा के द्वारा मिलने वाली आशिषों की बात की गई थी![13]

स्तिफनुस ने कुलपतियों की बात करके एक नये विषय का परिचय दे दिया कि इस्राएल के सम्पूर्ण इतिहास में, उन्होंने छुटकारा दिलाने के लिए परमेश्वर द्वारा नियुक्त लोगों को *ठुकरा* दिया था! परमेश्वर की ओर से प्रमाणित प्रथम छुटकारा देने वाला यूसुफ था, जिसे उनके पुरखाओं ने ठुकराया था:

> और कुलपतियों ने यूसुफ से डाह करके उसे मिसर देश जाने वालों के हाथ बेचा;[14] परन्तु परमेश्वर उसके साथ था।[15] और उसे उसके सब क्लेशों से छुड़ाकर[16] मिसर के राजा फिरौन के आगे अनुग्रह और बुद्धि दी, और उस ने उसे मिसर पर और अपने सारे घर पर हाकिम ठहराया। तब मिसर और कनान के सारे देश में अकाल पड़ा;[17] जिस से भारी क्लेश हुआ, और हमारे बापदादों को अन्न नहीं मिलता था। परन्तु याकूब ने यह सुनकर कि मिसर में अनाज है, हमारे बापदादों को पहिली बार भेजा। और दूसरी बार यूसुफ अपने भाइयों पर प्रकट हो गया, और यूसुफ की जाति फिरौन को मालूम हो गई। तब यूसुफ ने अपने पिता याकूब और अपने सारे कुटुम्ब को,[18] जो पछत्तर व्यक्ति थे,[19] बुला भेजा (7:9-14)।

यहां स्तिफनुस द्वारा तीन तथ्यों पर दिए गए ज़ोर पर ध्यान दीजिए: (1) यूसुफ के भाइयों (कुलपतियों व यहूदी लोगों के ''पिताओं'') ने यूसुफ को ठुकरा दिया।

(2) परमेश्वर ने उन्हें *दूसरा* अवसर दिया (जब वे अनाज खरीदने मिसर में आए)। (3) दूसरी बार, उन्हें यूसुफ को अपना छुड़ाने वाला स्वीकार करना *था* या फिर (भूख से) मरना। स्तिफनुस ने इस प्रवचन में एक अन्य छुटकारा देने वाले के बारे में इन सच्चाइयों पर ज़ोर देना था।

स्तिफनुस तेज़ी से चार सौ साल के इतिहास को लांघ गया:

> तब याकूब मिसर में गया; और वहां वह और हमारे बापदादे मर गए। और वे शिकिम में पहुंचाए जाकर[20] उस कब्र में रखे गए, जिसे इब्राहीम ने ... शिकिम में ... मोल लिया था (7:15, 16)।[21]

पवित्र आज्ञाएं (7:17-43)

स्तिफनुस पर मूसा (6:11) और व्यवस्था (6:13) के विरुद्ध निन्दाजनक बातें करने का आरोप लगाया गया था। इस प्रवचन की मुख्य बात मूसा की कहानी थी। उसने पृष्ठभूमि देते हुए आरम्भ किया:

> परन्तु जब उस प्रतिज्ञा के पूरे होने का समय निकट आया, जो परमेश्वर ने इब्राहीम से की थी,[22] तो मिसर में वे लोग बढ़ गए; और बहुत हो गए। जब तक कि मिसर में दूसरा राजा न हुआ जो युसूफ को नहीं जानता था।[23] उस ने हमारी जाति से चतुराई करके हमारे बापदादों के साथ यहां तक दुर्व्यवहार किया, कि उन्हें अपने बालकों को फेंक देना पड़ा कि वे जीवित न रहें[24] (7:17-19)।

स्तिफनुस का प्रवचन यह बताते हुए जारी रहा कि कैसे इस दुख की घड़ी में किसी का जन्म हुआ, जिसे परमेश्वर ने अपने लोगों को छुड़ाने के लिए इस्तेमाल करना था :

> उस समय मूसा उत्पन्न हुआ[25] जो बहुत ही सुन्दर था; और वह तीन महीने तक अपने पिता के घर में पाला गया। परन्तु जब फेंक दिया गया [सरकंडों की टोकरी में रखकर नील नदी में],[26] तो फिरौन की बेटी ने उसे उठा लिया, और अपना पुत्र करके पाला। और मूसा को मिसरियों की सारी विद्या पढ़ाई गई, और वह बातों और कामों में सामर्थी था (7:20-22)।[27]

स्तिफनुस को सुनने वालों में से कोई भी यह नहीं मान सकता था कि उसके मन में मूसा के प्रति इतना अधिक सम्मान था।

फिर उसने बताया कि मूसा ने, जो अपने आप को एक इब्रानी मानता था, कैसे अपने लोगों को छुटकारा दिलाने के लिए योजनाएं बनाईं। स्तिफनुस ने अपने श्रोताओं को यह

भी स्मरण दिलाया कि इस्राएल को छुड़ाने के लिए पहली बार कोशिश करने पर, मूसा को उसके भाइयों ने ठुकरा दिया था:

> जब वह चालीस वर्ष का हुआ,[28] तो उसके मन में आया कि मैं अपने इस्राएली भाइयों से भेंट करूं। और उस ने एक व्यक्ति पर अन्याय होते देखकर, उसे बचाया, और मिसरी को मारकर सताए हुए का पलटा लिया।[29] उसने सोचा कि मेरे भाई समझेंगे कि परमेश्वर मेरे हाथों से उन का उद्धार करेगा,[30] परन्तु उन्होंने न समझा। दूसरे दिन जब वे आपस में लड़ रहे थे, तो वह वहां आ निकला; और यह कहके उन्हें मेल करने के लिए समझाया, कि हे पुरुषो, तुम तो भाई भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो? परन्तु जो अपने पड़ोसी पर अन्याय कर रहा था, उस ने उसे यह कहकर हटा दिया, कि तुझे किस ने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है?[31] क्या जिस रीति से तू ने कल मिसरी को मार डाला मुझे भी मार डालना चाहता है? यह बात सुनकर, मूसा भागा;[32] और मिद्यान देश में परदेशी होकर रहने लगा: और वहां उसके दो पुत्र उत्पन्न हुए (7:23-29)।

स्तिफनुस ने एक बार फिर उसी प्रकार यूसुफ का उदाहरण देकर समझाया कि परमेश्वर ने अपने लोगों को एक और अवसर दिया:

> जब पूरे चालीस वर्ष बीत गए, तो एक स्वर्गदूत ने[33] सीनै पहाड़ के जंगल में उसे जलती हुई झाड़ी की ज्वाला में दर्शन दिया।[34] मूसा ने उस दर्शन को देखकर अचम्भा किया, और जब देखने के लिए पास गया, तो प्रभु का यह शब्द हुआ कि मैं तेरे बापदादों, इब्राहीम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर हूं: तब तो मूसा कांप उठा, यहां तक कि उसे देखने का हियाव न रहा। तब प्रभु ने उस से कहा; अपने पांवों से जूती उतार ले, क्योंकि जिस जगह तू खड़ा है, वह पवित्र भूमि है। मैंने सचमुच अपने लोगों की दुर्दशा को जो मिसर में हैं, देखा है; और उन की आह और उन का रोना सुन लिया है; इसलिए उन्हें छुड़ाने के लिए उतरा हूं। अब आ, मैं तुझे मिसर में भेजूंगा (7:30-34)।

इससे पहले कि किसी प्रकार वे इस बात से चूक जाते कि मूसा परमेश्वर की ओर से भेजा गया छुटकारा दिलाने वाला था और उनके बाप-दादाओं ने उसे ठुकरा दिया था, स्तिफनुस ने ये तथ्य स्पष्ट रूप से दे दिए: ''जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था कि तुझे किसने हम पर हाकिम और न्यायी ठहराया है; उसी को परमेश्वर ने हाकिम और *छुड़ाने वाला* ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा'' (7:35)। यूसुफ की कहानी की तरह, यदि वे परमेश्वर के छुड़ाने वाले को *दूसरी* बार ठुकरा देते (और वे मिसर से बाहर जाने के लिए उसके पीछे न चलते), तो वे मारे जाते (दासता में)।

आयत 35 से स्तिफनुस ने मूसा का एक छोटा सा रेखाचित्र खींच दिया:

> जिस मूसा को उन्होंने यह कहकर नकारा था ... उसी को परमेश्वर ने हाकिम और छुड़ाने वाला ठहराकर, उस स्वर्गदूत के द्वारा जिसने उसे झाड़ी में दर्शन दिया था, भेजा। यही व्यक्ति मिसर और लाल समुद्र और जंगल में चालीस वर्ष तक अद्‌भुत काम और चिह्न दिखा दिखाकर उन्हें निकाल लाया। यह वही मूसा है, जिसने इस्राएलियों से कहा; कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए मुझ सा एक भविष्यवक्ता उठाएगा।[35] यह वही है, जिस ने जंगल में कलीसिया[36] के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उससे बातें कीं, और हमारे बापदादों के साथ था: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुंचाए (7:35-38)।

मूसा के जीवन के अन्तिम चालीस वर्षों के इस रेखाचित्र में स्तिफनुस ने मूसा तथा मूसा द्वारा दी गई व्यवस्था, दोनों के प्रति सम्मान दिखाया। स्तिफनुस ने टिप्पणी की कि परमेश्वर के एक स्वर्गदूत ने पहाड़ पर मूसा से बात की, और स्तिफनुस ने यहूदियों को दी गई व्यवस्था को ''जीवित वचन''[37] कहा। स्तिफनुस ने मूसा या व्यवस्था की निन्दा के बारे में स्वयं को निर्दोष साबित किया।

स्तिफनुस की बातों का एक और उद्देश्य था, जो इससे भी अधिक महत्वपूर्ण था। उसने सभा को स्मरण दिलाया कि मूसा ने कहा, ''परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिए *मुझ सा* एक भविष्यवक्ता उठाएगा।'' फिर उसने स्मरण दिलाया कि मूसा किसके जैसा था अर्थात वह छुड़ाने वाला था (आयत 35)। वह अद्‌भुत कार्य करने वाला था (आयत 36)। वह एक भविष्यवक्ता था (आयत 37)। उसकी एक कलीसिया थी (आयत 38)। उसने परमेश्वर का संदेश लोगों तक पहुंचाया (आयत 38)। वह हर प्रकार से यीशु नासरी जैसा था।

तथापि, स्तिफनुस इनमें समानता पर ज़ोर देने के लिए तैयार नहीं था। उसने पहले अपने श्रोताओं को स्मरण दिलाया कि परमेश्वर ने जब उनके बाप-दादाओं को दूसरा मौका दिया तो उन्होंने *फिर से* परमेश्वर के छुड़ाने वाले को ठुकरा दिया:

> परन्तु हमारे बापदादों ने उसकी माननी न चाही; बरन उसे हटाकर अपने मन मिसर की ओर फेरे। और हारून से कहा; हमारे लिए ऐसे देवता बना, जो हमारे आगे-आगे चलें, क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देश से निकाल लाया, हम नहीं जानते उसे क्या हुआ? उन दिनों में उन्होंने एक बछड़ा बनाकर,[38] उस की मूरत के आगे बलि चढ़ाया; और अपने हाथों के कामों में मगन होने लगे (7:39-41)।

जीवित वचनों के स्थान पर उन्होंने मृत मूर्तियों को स्वीकार किया। जब उन्होंने परमेश्वर के छुड़ाने वाले को दूसरी बार ठुकराया तो परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का। जंगल में इस्राएलियों द्वारा परमेश्वर को ठुकराना उनके लगातार ठुकराने का पूर्व संकेत था, इसलिए स्तिफनुस ने यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर अपने ठुकराए जाने को सहन नहीं करता, आमोस नबी के शब्दों का प्रयोग करके इतिहास को संक्षिप्त कर दिया:

> सो परमेश्वर ने मुंह मोड़कर उन्हें छोड़ दिया,[39] कि आकाशगण पूजें;[40] जैसा भविष्यवक्ताओं की पुस्तक में लिखा है;[41] कि हे इस्राएल के घराने, क्या तुम जंगल में चालीस वर्ष तक पशुबलि और अन्नबलि मुझ ही को चढ़ाते रहे ?[42] और तुम मोलेक के तम्बू[43] और रिफान देवता[44] के तारे को लिए फिरते थे; अर्थात उन आकारों को जिन्हें तुम ने दण्डवत करने के लिए बनाया था: सो मैं तुम्हें बाबुल के परे ले जाकर बसाऊंगा[45] (7:42, 43)।

परमेश्वर ने इस्राएलियों को (मिसर की) दासता से छुड़ाया, परन्तु वे उसके ठहराए हुए छुड़ाने वालों को लगातार ठुकराते रहे (जंगल में और कनान देश में) परमेश्वर ने उन्हें वापस (बाबुल की) दासता में भेज दिया!

पवित्र आंगन (7:44-50)

मोलेक के तम्बू की बात ने स्तिफनुस के प्रवचन के तीसरे भाग की कड़ी के रूप में काम किया, जिसमें उसने पहले परमेश्वर के तम्बू और फिर मन्दिर की बात की। इस तीसरे भाग में, स्तिफनुस उस आरोप का उत्तर दे रहा था कि वह मन्दिर के विरुद्ध बोला था (6:13, 14)। तथापि, उसने दूसरे आरोपों का स्पष्टीकरण अलग ढंग से दिया। परमेश्वर, मूसा, और व्यवस्था के विरुद्ध लगाए गए आरोपों के सम्बन्ध में उसने इन तीनों के प्रति गहरा सम्मान दिखाया। मन्दिर के विरोध में लगाए गए आरोप के बारे में उसने कहा कि इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उसने ऐसा किया या नहीं क्योंकि तुलनात्मक रूप से मन्दिर इतना महत्वपूर्ण नहीं था:

> ''साक्षी का तम्बू[46] जंगल में हमारे बापदादों के बीच में था; जैसा उस ने ठहराया, जिस ने मूसा से कहा; कि जो आकार तू ने देखा है, उसके अनुसार इसे बना।[47] उसी तम्बू को हमारे बापदादे पूर्वकाल से पाकर यहोशू के साथ यहां ले आए; जिस समय कि उन्होंने उन अन्यजातियों का अधिकार पाया, जिन्हें परमेश्वर ने हमारे बापदादों के साम्हने से निकाल दिया; और वह दाऊद के समय तक रहा''[48] (7:44, 45)।

स्तिफनुस ने अपने श्रोताओं को स्मरण दिलाया कि उनके बाप-दादा यरूशलेम में मन्दिर बनने के बहुत पहले से ही परमेश्वर की आराधना करते थे। परमेश्वर ने मूसा को मन्दिर बनाने की नहीं, बल्कि तम्बू बनाने की आज्ञा दी थी। उनके बाप-दादा जंगल और कनान में *चार सौ वर्ष* 'दाऊद के समय तक'' तम्बू में आराधना करते रहे।

वाचा के सन्दूक हेतु स्थायी निवास के लिए एक भवन का विचार दाऊद ने ही दिया था: ''दाऊद पर परमेश्वर ने अनुग्रह किया,[49] सो उसने बिनती की कि मैं याकूब के परमेश्वर के लिए निवास स्थान ठहराऊं'' (7:46)। दाऊद के इस विचार को सहमति मिल गई परन्तु उसे मन्दिर बनाने की अनुमति नहीं मिली थी (2 शमूएल 7:2-13): ''परन्तु

सुलैमान [दाऊद के पुत्र] ने उसके लिए घर बनाया'' (7:47; तु. 2 शमूएल 7:2-13)। तात्पर्य यह है कि यदि मन्दिर वास्तव में अनिवार्य होता तो यह दाऊद के प्रस्ताव रखते ही बन जाता परन्तु मन्दिर सैकड़ों वर्ष बाद बना!

स्तिफनुस की यह बात उन्हें अति शर्मनाक लगी (सम्भवत: उसने अपने प्रचार में पहले भी कही थी, जिससे शायद यह समझा गया होगा कि उसने ऐसा मन्दिर के विरोध में कहा): ''परन्तु परमप्रधान हाथ के बनाए घरों में नहीं रहता'' (7:48क)।[50] इस प्रकार का वाक्य उसके श्रोताओं को क्रोधित करने वाला था, परन्तु क्या यह परमेश्वर की निन्दा थी? सुलैमान ने मन्दिर को अर्पित करते समय परमेश्वर से प्रार्थना की, ''स्वर्ग में वरन सब से ऊंचे स्वर्ग में भी तू नहीं समाता, फिर मेरे बनाए हुए इस भवन में क्योंकर समाएगा!'' (1 राजा 8:27; तु. 2 इतिहास 6:18)। स्तिफनुस ने सभा को स्मरण दिलाया कि यशायाह नबी ने इसी सच्चाई पर ज़ोर दिया था:

> ... जैसा कि भविष्यवक्ता ने कहा। कि प्रभु कहता है, स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथ्वी मेरे पांवों तले की पीढ़ी है, मेरे लिए तुम किस प्रकार का घर बनाओगे? और मेरे विश्राम का कौन सा स्थान होगा? क्या ये सब वस्तुएं मेरे हाथ की बनाई नहीं? (7:48ख-50 क; यशायाह 66:1, 2)।

यशायाह ने कहा कि सारी सृष्टि परमेश्वर का मन्दिर है! फिर, इसमें सभा के बेचैन होने की क्या बात थी, जब किसी का तात्पर्य यह हो कि तुलनात्मक रूप से मनुष्य की बनाई इमारत कम महत्व रखती है?

लोगों को सिखाने के लिए कि परमेश्वर अपने लोगों में वास करता है, यह बहुत ही उपयुक्त समय था।[51] यशायाह ने यह भी टिप्पणी की थी कि परमेश्वर ने कहा, ''... मैं पवित्र स्थान में निवास करता हूं ... कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं'' (यशायाह 57:15)।[52] परन्तु, स्तिफनुस को अपने प्रवचन के धागों को सुलझाने का अवसर नहीं था।[53]

चौंकाने वाला निष्कर्ष (7:50-53)

स्तिफनुस की प्रस्तुति की दिशा आयत 50 में एकदम और कठोरता में बदल गई। क्या वह अपने श्रोताओं के चेहरों की घृणा को देख सकता था? क्या उसे इसका बोध हो गया था कि जो कुछ वह कहना चाहता था, वह कहने के लिए उसे समय नहीं मिलेगा? क्या ''भविष्यवक्ता'' (आयत 48) का हवाला केवल स्तिफनुस को ही याद दिलाने के लिए था कि उन्होंने नबियों के साथ कैसा व्यवहार किया (आयत 52)? कारण कुछ भी हो, स्तिफनुस तेज़ी से रक्षात्मक न होकर अपने ऊपर आरोप लगाने वालों पर वही आरोप लगाते हुए जो उन्होंने उस पर लगाया था, आक्रामक हो गया:

> हे हठीले, और मन और कान के खतनारहित लोगो,[54] तुम सदा पवित्र आत्मा का साम्हना करते हो।[55] जैसा तुम्हारे बापदादे करते थे, वैसा ही तुम भी करते हो। भविष्यवक्ताओं में से किस को तुम्हारे बापदादों ने नहीं सताया,[56] और उन्होंने उस धर्मी[57] के आगमन का पूर्वकाल से संदेश देनेवालों को मार डाला, और अब तुम भी उसके पकड़वाने वाले और मार डालने वाले हुए। तुम ने स्वर्गदूतों के द्वारा ठहराई हुई व्यवस्था तो पाई, परन्तु उसका पालन नहीं किया (7:50ख-53)।

उन्होंने स्तिफनुस पर परमेश्वर का आदर न करने का आरोप लगाया था, परन्तु जिन पर परमेश्वर ने पवित्र आत्मा भेजा था, उनकी न सुनकर वे स्वयं परमेश्वर के पवित्र आत्मा का सामना करते थे! उन्होंने स्तिफनुस पर मूसा और व्यवस्था का सम्मान न करने का आरोप लगाया, परन्तु वे स्वयं मूसा की व्यवस्था का पालन नहीं करते थे! उनके कान और मन सच्चाई को सुनने से इन्कार करते थे और उनकी गर्दनें सच्चाई के सामने झुकने से इन्कार करती थीं!

वे अपने बाप-दादों की तरह ही थे! उनके बाप-दादों ने यूसुफ को ठुकराया था। बाद में, उन्होंने दो बार मूसा को ठुकराया। अन्त में, उन्होंने नबियों को न सिर्फ ठुकराया, बल्कि उनका कत्ल भी कर दिया! उसी प्रकार, सभा ने उस धर्मी, अर्थात यीशु को भी ठुकरा दिया, जब वह आया तो उन्होंने उसे मार डाला!

टीकाकार कई बार स्तिफनुस को अचानक आक्रामक होते हुए, उसकी आंखों में चमक व उसको अंगुली चुभोते हुए दिखाते हैं जैसे वह सभा को उसे मृत्यु दण्ड देने के लिए विवश कर रहा हो। एक ऐसे आदमी के चरित्र के लिए जो ''अनुग्रह से परिपूर्ण'' (6:8) था, जिसने सभा को आदर सहित ''भाइयो, और पितरो'' (7:2) कहकर सम्बोधित किया था और जिसने बाद में प्रार्थना की, कि ''हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा!''(7:60) यह बात कहना शोभा नहीं देती। मेरा सुझाव है कि पद 50 से 53 में स्तिफनुस का उद्देश्य सभा में अपना क्रोध दिखाना नहीं था, बल्कि उन्हें मन फिराव के लिए एक झटका देना था अर्थात उनके मनों की पथरीली भूमि को तोड़ने का एक प्रयास था। मैं कल्पना करता हूं कि स्तिफनुस बहुत ही नम्रता से बोला होगा, जैसे उसका मन बहुत दुखी हो।

सारांश

स्तिफनुस ने एक बहुत ही ज़ोरदार प्रवचन दिया। उसके सुनने वालों ने अपने हाथ कानों पर रख लिए, उस पर चिल्लाए और उसे सभागृह से खींच कर ले आए। स्तिफनुस ने महासभा को चुनौती दी थी कि परमेश्वर के अगुओं को ठुकराकर वे अपने बाप-दादों की तरह न बनें, किन्तु उन्होंने उसे पत्थर मार-मार कर मार डाला, उन्होंने भी वैसा ही किया जैसा उनके बाप-दादा करते थे।

क्या स्तिफनुस के प्रवचन में हमारे लिए कोई सबक है? बहुत से। उदाहरण के लिए हमें उस सब के लिए परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए जो इतिहास में हमारे

उद्धार के लिए उसने किया। यकीनन ही हमारे लिए सबसे चुनौती भरी शिक्षा यह है कि आज परमेश्वर के छुड़ाने वालों को ठुकराने से बचा जाए। हम जानते हैं कि ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं ...'' (इब्रानियों 1:1, 2)। यीशु ने कहा, ''जो कोई मुझे तुच्छ जानता है और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता है उस को दोषी ठहराने वाला तो एक है: अर्थात जो वचन मैंने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)।

हममें से हर एक को अपने आप से यह पूछना चाहिए, ''यीशु के मेरे सामने खड़ा होने पर, क्या मैं उसे स्वीकार करता हूं या ठुकराता हूं?'' अन्य शब्दों में, मैं स्तिफनुस के साथ खड़ा हूं या महासभा के साथ?

विज़ुअल-एड नोट्स

आप स्तिफनुस के प्रवचन में इतिहास को दिखाने के लिए नीचे दिए गए सरल रेखाचित्र को दिखा सकते हैं। चित्र के ऊपर ''ठुकराया हुआ'' शब्द लिख लें और फिर इस ''ठुकराया हुआ'' शब्द से एक तीर खींचें जो परमेश्वर के प्रत्येक छुड़ाने वालों के चित्र की ओर जाता हो।

चाहें तो, आप ''इब्राहीम... 12 कुलपतियों'' के सामने पत्थरों की एक वेदी का रेखाचित्र ''खड़े मूसा'' के पास जलती झाड़ी, तम्बू के पास ''इस्राएल की अगुआई करते मूसा,'' और ''इस्राएल का प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश'' के बाद मन्दिर को भी जोड़ सकते हैं। आप इसका इस्तेमाल यह दिखाने के लिए कर सकते हैं कि स्तिफनुस ने ज़ोर दिया कि लोग यरूशलेम के अलावा अन्य स्थानों पर, और मन्दिर के बनने से बहुत पहले आराधना करते थे।

यदि आप ठीक समझें तो स्तिफनुस के प्रवचन को दोबारा बताने के लिए पुराने नियम के संसार का मानचित्र इस्तेमाल किया जा सकता है। मुख्य पात्रों के कुछ नाम जोड़ लें। कहानी को दोहराते समय, जहां भी यहूदियों ने परमेश्वर के छुटकारा दिलाने वालों को ठुकराया, मानचित्र के उपयुक्त क्षेत्र में ''ठुकराया हुआ'' शब्द जोड़ लें।

प्रवचन नोट्स

स्तिफनुस ने यह मानकर कि उसके श्रोता उसके ऐतिहासिक विवरणों से परिचित हैं, उनके विषय में विस्तार से नहीं बताया। मैंने भी अपने पाठ में ऐसा ही किया है। यदि आपके श्रोता उन घटनाओं से अपरिचित हैं, तो आप उन्हें संक्षेप में बता सकते हैं। उन्हें ढूंढने में आपकी सहायता के लिए मैंने पुराने नियम के कुछ विवरण दिए हैं।

इब्रानियों 11:23-29 के साथ प्रेरितों 7:17-44, मूसा पर बढ़िया अतिरिक्त पात्र

अध्ययन का आधार उपलब्ध करवाता है।

प्रेरितों 7:26 का प्रयोग करते हुए एक आवश्यक प्रवचन दिया जा सकता है: ''हे पुरुषो, तुम तो भाई-भाई हो, एक दूसरे पर क्यों अन्याय करते हो?'' (आपको चाहिए कि आप इसे उत्पत्ति 13:8 में लूत को कहे इब्राहीम के शब्दों से मिलाएं: ''... मेरे और तेरे बीच, में ... झगड़ा न होने पाए; क्योंकि हम लोग भाई बन्धु हैं।'')

पाद टिप्पणियां

[1]यह *केवल* सुसमाचारक प्रवचन है जो किसी गैर प्रेरित द्वारा (अन्य शब्दों में, एक प्रेरित के सम्बन्ध में नहीं) दिया गया है। [2]यह लम्बा शायद इसलिए है क्योंकि यह अपने चुने हुए लोगों तक पहुंचने के लिए परमेश्वर के प्रयासों का चरम है। [3]जिम्मी ऐलन ऐसा मानते हैं कि प्रवचन को स्तिफनुस द्वारा पूरा करने से पहले ही रोक दिया गया (*सर्वे ऑफ़ ऐक्ट्स* [सरसी, आरक.: लेखक के द्वारा, 1986], 73), और मैं उससे सहमत हूं। उदाहरण के लिए, पुनरुत्थान का ज़रा भी उल्लेख नहीं किया गया जो कि समस्त नये नियम के प्रचार में अनिवार्य है। यह सम्भव है कि स्तिफनुस ने अपने पाठ के कई धागों को निकालकर इकट्ठा करके उनका इस्तेमाल करने की योजना बनाई हो,परन्तु उसके ऐसा कर पाने से पहले ही उसकी हत्या कर दी गई। [4]पिछले एक पाठ में दिए गए कथन को याद रखें: ''यदि आप व्यक्ति का सम्मान नहीं करते, तो उसके पद का सम्मान करें।'' [5]कई टीकाकार स्तिफनुस के प्रवचन पर ''स्तिफनुस या लूका द्वारा की गई सात ऐतिहासिक गलतियों'' की ओर ध्यान दिलाते हुए अत्यन्त आलोचक हैं। क्योंकि ये तथाकथित गलतियां किसी भी प्रकार स्तिफनुस की शिक्षा की सच्चाई को प्रभावित नहीं करतीं, और क्योंकि ''व्यवस्था के विशेषज्ञों'' (शास्त्रियों) ने स्तिफनुस के तथ्यों पर आपत्ति नहीं की, इसलिए मुझे उसके विचार के बहाव को रोक कर उनके साथ बहस करने का कोई कारण दिखाई नहीं देता। मेरा मानना है कि स्तिफनुस के प्रवचन देने और लूका को उसे दर्ज करने में आत्मा की प्रेरणा थी। इसलिए, मेरा मानना है कि स्तिफनुस ने जो कुछ भी कहा उसमें कुछ गलत नहीं था, और कोई भी स्पष्ट उलझन केवल हमारे ज्ञान या समझ की कमी के कारण ही है। उस तथाकथित गलती के उठने की तरह, मैं यह दिखाने के लिए कि उलझनें वास्तविकता से अधिक काल्पनिक हैं, संक्षेप में बात करूंगा। पहली गलती आयत 2 और 3 में मिलती है। आलोचक कहते हैं कि उत्पत्ति 11:31-12:3 में लिखा है कि परमेश्वर ने हारान में आयत 3 वाली आज्ञा के साथ इब्राहीम को दर्शन दिया, जब कि स्तिफनुस ने ''(इब्राहीम के) हारान में बसने से पहले'' की बात की। उत्पत्ति 15:7 और नहेमायाह 9:7 यह स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर इब्राहीम के पास तब आया जब वह कसदियों के ऊर में था। स्तिफनुस ने प्रकट किया कि ऊर में इब्राहीम को परमेश्वर का संदेश वही था जो उसने बाद में हारान में पाया। (इन तथाकथित गलतियों पर सम्पूर्ण विचार के लिए, देखिए जे. डब्ल्यू. मेक्गर्वे की *न्यू कमैन्ट्री ऑन ऐक्ट्स* [डिलाइट, आरक.: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., n.d]) अथवा ऐलन की *सर्वे ऑफ़ ऐक्ट्स* । [6]परमेश्वर पहले कसदियों के ऊर में इब्राहीम के पास आया। पृष्ठ 194 पर पुराने नियम के संसार का मानचित्र देखिए। कसदी दक्षिणी बेबिलोन में एक ज़िला था। अन्ततः यह नाम एक क्षेत्र के लिए प्रसिद्ध हो गया जिसमें सारा बेबिलोन शामिल था। [7]पुराने नियम के संसार का मानचित्र देखिए। [8]इस भूमि को इब्राहीम के समय में कनान कहा जाता था; स्तिफनुस के समय में इसे फलस्तीन कहा जाता था। पुराने नियम के संसार का मानचित्र देखिए। [9]इब्राहीम ने कब्रिस्तान के लिए वहां एक जगह खरीदी (देखिए 7:16 पर नोट्स), परन्तु यह उसक ी संतान के *रह* सकने के लिए जगह नहीं थी, इसे ''विरासत'' नहीं कहा जाता। [10]यह मिसर की दासता है (ध्यान दें आयत 15 और 17)। ''चार सौ वर्ष'' एक समसंख्या है।

[11]देखिए उत्पत्ति 17:9-14, 21. [12]स्तिफनुस का सम्बोधन ''तेजोमय परमेश्वर'' (7:2) से आरम्भ

हुआ और ''परमेश्वर की महिमा'' (7:55) के साथ समाप्त हुआ। इस सारे समय में उसके चेहरे पर तेज झलकता था (6:15)। [13]उत्पत्ति 22:18; प्रेरितों 3:25; गलतियों 3:16. [14]उत्पत्ति 37:3, 4, 25-28. [15]उत्पत्ति 39:2, 21. [16]उत्पत्ति 41:38-45, 54. [17]उत्पत्ति 41:54. [18]उत्पत्ति 45:17-21. [19]इब्रानी बाइबल में ''सत्तर'' का इस्तेमाल हुआ है (उत्पत्ति 46:27; निर्गमन 1:5; व्यवस्थाविवरण 10:22), परन्तु पुराने नियम का यूनानी अनुवाद (जिसे सप्तति अनुवाद कहा जाता है) उत्पत्ति 46:20 में मनश्शे के एक पुत्र, एप्रैम के दो, और दोनों के एक-एक पोते को जोड़ देता है। इस प्रकार वह गिनती ''पचहत्तर'' हो जाती है। [20]जिस समय स्तिफनुस ने बात की, शकेम सामरिया में था। कुछ लोगों का विचार है कि स्तिफनुस इस विचार को फैला रहा था कि सामरिया भी वैसे ही पवित्र भूमि थी जैसे यहूदिया। इस प्रकार वह सुसमाचार को सामरिया में ले जाने की तैयारी कर रहा था (8:5)।

[21]आयत 16 दो भूमि खरीदों और दो कब्रिस्तानों को संक्षिप्त कर देती है (उत्पत्ति 23:17, 18; 25:9-11; 33:19; 35:29; 50:19; यहोशू 24:32)। ''स्तिफनुस का साहित्यिक ढंग (जिससे वह याद करवाता है कि याकूब और बारह कुलपति मिसर में नहीं बल्कि कनान में दफ़नाए गए थे) आधुनिक श्रोताओं के लिए अजीब है परन्तु उसके सुनने वालों को इसकी पूरी समझ होगी'' (लूईस फ़ॉस्टर, नोट्स ऑन ऐक्ट्स, द NIV *स्टडी बाइबल* [ग्रैंड रैपिड्स, मिशि.: ज़ॉन्डर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1985], 1655)। [22]यह 5 से 7 आयतों की बात है। [23]निर्गमन 1:8. [24]निर्गमन 2:2, 3. स्तिफनुस ने संकेत दिया कि कुछ इस्राएलियों ने वास्तव में फिरौन के आदेश का पालन किया। [25]निर्गमन 2:1-10. [26]''फेंक दिया'' शब्द का अर्थ हो सकता है कि मूसा के माता-पिता ने फिरौन के आदेश का पालन किया। उन्होंने उसे बिल्कुल वैसे ही नहीं फेंका जैसे फिरौन ने आज्ञा दी थी, इसलिए ''फेंक दिया'' शब्द सम्भवत: शब्दों का हेर-फेर है। कूड़े में ''फेंकने'' के बजाय, मूसा को फिरौन की पुत्री की ओर ''फेंक'' दिया गया। [27]स्तिफनुस ने मूसा के बड़े होने के बारे में विस्तार से बताया जिसका हमें निर्गमन की पुस्तक में पता नहीं चलता। नोट: आवश्यक नहीं कि वाक्यांश ''बातों में सामर्थी'' निर्गमन 4:10 में मूसा के कथन से टकराता हो: (1) आवश्यक नहीं कि ''बातों में सामर्थी'' का अर्थ ''वाक्पटु'' हो; इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि मिसर में उसकी बात का प्रभाव था। (2) हो सकता है कि निर्गमन 4:10 में मूसा ने उस ज़िम्मेदारी से बचने के लिए, जो परमेश्वर उस पर डाल रहा था, अपनी अयोग्यता को ज़रूरत से ज्यादा ही बता दिया हो। [28]यह वर्णन निर्गमन में नहीं मिलता कि जब मूसा मिसर से निकला तो वह चालीस वर्ष का था। [29]निर्गमन 2:12. [30]यह निर्गमन के वृत्तांत में एक और विचार जोड़ देता है कि मूसा को जलती झाड़ी को देखने से पहले ही ईश्वरीय मिशन का भाव था। स्तिफनुस का प्वाइंट यह है कि जब उन्होंने मूसा को चालीस वर्ष की उम्र में ठुकराया, तो वे उसे ठुकरा रहे थे जिसे *परमेश्वर* ने उनके छुटकारे के लिए नियुक्त किया था।

[31]निर्गमन 2:13, 14. [32]निर्गमन मूसा के भागने का कारण फिरौन के बदले का भय बताता है (निर्गमन 2:15)। स्तिफनुस के शब्द इस्राएलियों द्वारा ठुकराए जाने की प्रेरणा की बात करते हैं। [33]स्तिफनुस ने सम्पूर्ण प्रवचन में स्वर्गदूतों की भूमिका पर ज़ोर दिया। याद रखें कि सदूकी, जिनका महासभा पर नियन्त्रण था, स्वर्गदूतों में विश्वास नहीं रखते थे! [34]निर्गमन 3:1-4:17 [35]व्यवस्थाविवरण 18:15-19; तु. प्रेरितों 3:22, 23. [36]देखिए भजन संहिता 22:22. यूनानी अनुवादित शब्द ''कलीसिया'' का अर्थ *एकलीसिया* है। इस शब्द का प्रेरितों के काम में साधारणत: ''मण्डली'' अथवा ''कलीसिया'' के रूप में अनुवाद हुआ है। इसका अर्थ यह नहीं कि मसीह की कलीसिया (मत्ती 16:18) का अस्तित्व जंगल में था। इस शब्द का इस्तेमाल ''सभा'' के भाव से हुआ है। ''प्रेरितों के काम, भाग-1'' की शब्दावली में देखिए ''कलीसिया।'' [37]रोमियों 3:2; इब्रानियों 5:12; 1 पतरस 4:11 भी देखिए। यूनानी शब्द का अनुवाद ''वचन'' *लोगोस* का बहुवचन रूप है। मूलत:, स्तिफनुस ने ''जीवित वचन'' शब्द का प्रयोग किया। वचन के लिए यहां अंग्रेज़ी शब्द ओरेकल्ज़ एक लातीनी शब्द है जिसका अक्षरश: अर्थ है ''कही गई बातें।'' [38]निर्गमन 32:3, 35. यह सम्भवत: मिसरियों द्वारा बैल की पूजा करने का प्रभाव था। [39]इन शब्दों की तुलना रोमियों 1:24, 26, 28 में ''परमेश्वर ने उन्हें ... छोड़ दिया'' से करें। [40]''आकाशगण'' सूर्य, चांद और तारों को कहा गया। देखिए व्यवस्थाविवरण 17:3; 2 राजा 17:16; 21:3; 2 इतिहास 33:3, 4, 35; यिर्मयाह 8:2; 19:13.

[41]यह एक लपेटवीं पत्री थी जिसमें सभी तथाकथित ''छोटे नबी'' आते थे। विशेषकर, स्तिफनुस ने आमोस 5:25-27 का, सप्तति अनुवाद से उद्धरण दिया। [42]उनके पापों के लिए जानवरों के बलिदान पर विचार करने का यह एक दिलचस्प ढंग है। निर्दोष पशुओं को लोगों के पापों के लिए कष्ट झेलना पड़ता था। [43]''तम्बू'' शास्त्र को अक्षरश: प्रस्तुत करता है। NIV में ''मोलेक की वेदी'' है। [44]मोलेक अम्मोनियों के देवता का इब्रानी नाम था। रिफान यूनानी देवता ''शनि'' के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द था जो कि रोशनियों का देवता था। दोनों ही उस ''आकाशगण'' के भाग थे जिनकी उपासना इस्राएली करते थे (आयत 42)। [45]आमोस ने ''दमिश्क'' दिया है। आत्मा की प्रेरणा से, स्तिफनुस ने उसके स्थान पर ''बाबुल'' बताया क्योंकि यह वह *अन्तिम* जगह थी जहां से ठुकराए जाने के कारण वे निकाले गए थे। [46]तम्बू को ''साक्षी का तम्बू'' कहा गया क्योंकि अन्दर वाचा (अथवा साक्षी) का सन्दूक था, जिसमें दस आज्ञाओं वाली पत्थर की पट्टियां थीं (निर्गमन 25:22; 38:21)। [47]निर्गमन 25:40; इब्रानियों 8:5. [48]दाऊद के समय तक कनान में तम्बू की स्थिति की समीक्षा के लिए *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (मार्च 1999) के अंग्रेज़ी संस्करण में मेरा प्रवचन ''स्टैंडिंग ऑन होली ग्राउंड'' देखिए। [49]1 शमूएल 13:14; भजन 89:20-37. [50]पौलुस ने बाद में मूर्तिपूजक मन्दिरों के बारे में भी यही कहा (प्रेरितों 17:24)।

[51]परमेश्वर कलीसिया में वास करता है (1 कुरिन्थियों 3:16, 17)। ध्यान दें 1 पतरस 2:4-10. [52]यशायाह नबी ने स्तिफनुस द्वारा उद्धृत शब्दों के तुरन्त बाद के शब्दों जैसा कथन यशायाह 66:2 में दिया। [53]जहां तक हम जानते हैं, उसे पत्थर मारने वालों के द्वारा उसके प्रवचन को बीच में रोक दिया गया। प्रेरितों के काम में अब तक अन्य विस्तारित प्रवचन संक्षिप्त रूप में दिए गए हैं (पवित्र आत्मा द्वारा सम्पादित), इसलिए हम मान सकते हैं कि यह भी वैसा ही है। हो सकता है स्तिफनुस ने कुछ प्रासंगिकताएं दी हों जिनका लूका ने उल्लेख नहीं किया। [54]''हठीले और मन और कान के खतनारहित'' ढीठ, पूर्वाग्रह से भरे, और अवज्ञाकारी लोगों के लिए प्रयुक्त होने वाली पारिभाषिक शब्दावली है (निर्गमन 33:3, 5; लैव्यव्यवस्था 26:41; यिर्मयाह 6:10; यहेजकेल 44:7)। ''हठी'' शब्द एक ढीठ बैल के लिए प्रयोग किया जाता था जो अपनी गर्दन को जुए में डालने से इन्कार करता था। खतना परमेश्वर के अधीन होने का एक चिह्न था। इसलिए, ''मन और कान के खतनारहित'' का अर्थ था कि उन्होंने शरीर से परमेश्वर की अधीनता स्वीकार की, आत्मा से नहीं। उन्होंने अपने हृदयों को कठोर कर लिया था, और उन्होंने परमेश्वर के संदेशवाहकों की बातों पर ध्यान लगाने से इन्कार कर दिया था। [55]गिनती 27:14. उन्होंने उन भविष्यवक्ताओं का सामना करके जो पवित्र आत्मा के द्वारा बोलते थे, पवित्र आत्मा का सामना किया (2 पतरस 1:21)। जब लोग आज सुसमाचार को ठुकराते हैं, तो वे भी पवित्र आत्मा का सामना कर रहे होते हैं। [56]देखिए इब्रानियों 11:32-38. [57]देखिए प्रेरितों 3:14.

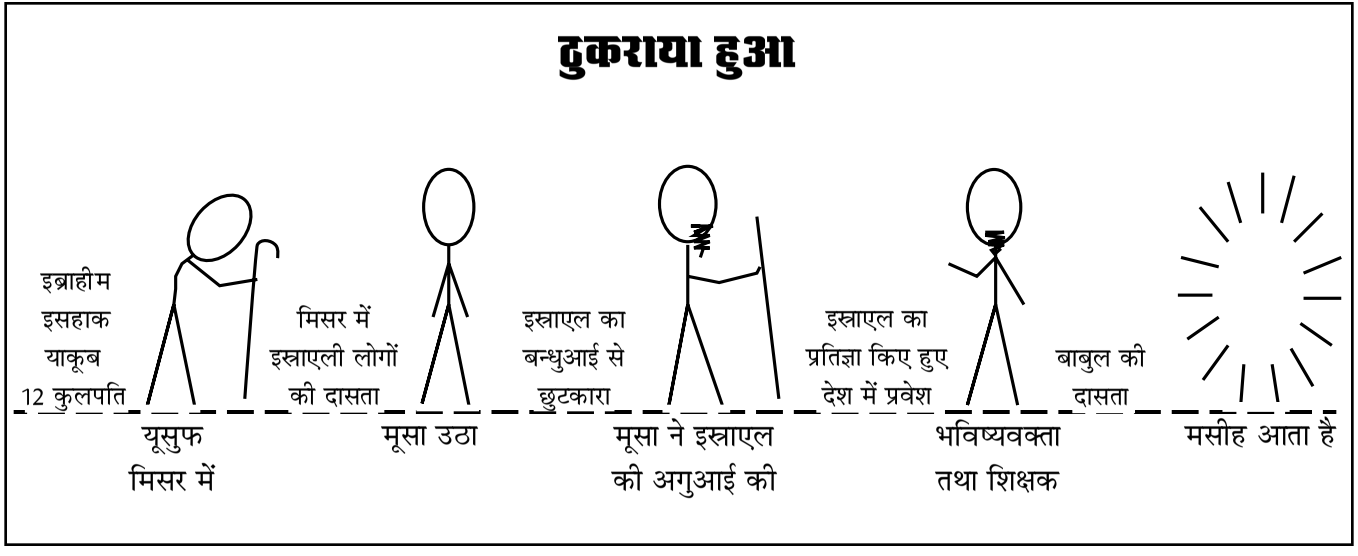

परमेश्वर का उद्धार का मार्ग दिखाने वाले अगुओं को ठुकराता दिखाती स्तिफनुस के प्रवचन की समय रेखा